भोपाल में स्थापति होगा महाराणा प्रताप लोक

चर्चा में क्यों?

22 मई, 2023 को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शविराज सहि चौहान ने महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर भोपाल लाल परेड मैदान में आयोजति समारोह में भोपाल में वीर शरिोमणि महाराणा प्रताप लोक का नरि्माण कयि जाने की घोषणा की।

प्रमुख बदिु

- स्मारक में महाराणा प्रताप के जीवन और कार्यों को चति्रति कयिा जाएगा। साथ ही उनके सात सहयोगयिों भामाशाह, पुंजाभील, चेतक और अन्य के योगदान को भी चति्रति कर दर्शाया जाएगा।
- महाराणा प्रताप द्वारा अपनी संस्कृति और स्वतंत्रता की रक्षा के लयि संघर्ष तथा जीवन मूल्यों पर अडगि रहने की उनकी क्षमता से आने वाली पीढ़ी अवगत हो सके और तदनुसार संस्कार ग्रहण कर सकें, इस उद्देश्य से महाराणा प्रताप लोक का नरि्माण कयिा जाएगा।
- समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में शालेय पाठ्यक्रम में महाराणा प्रताप के शौर्य और वीरता की कहानयिाँ पढ़ाई जाएंगी। साथ ही महाराणा प्रताप कल्याण बोर्ड का गठन भी कयिा जाएगा।
- गौरतलब है कि महाराणा प्रताप सहि ससिोदयिा का जन्म वक्रिम संवत 1597 तदनुसार 9 मई, 1540 राजस्थान के कुंभलगढ़ में महाराणा उदयसहि एवं माता रानी जयवंतारबाई के घर हुआ। वे महावीर राणा सांगा के पौत्र थे। वे इतहिास में वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम और दृढ़ प्रण के लयि अमर हैं।
- उन्होंने मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और कई सालों तक संघर्ष कयिा, अंतत: अकबर महाराणा प्रताप को अधीन करने में असफल रहा। महाराणा प्रताप की नीतयिाँ शवािजी महाराज से लेकर स्वतंत्रता सेनानयिों तक के लयि प्रेरणा-स्त्रोत बनीं।
- महाराणा जसि घोड़े पर बैठते थे वह घोड़ा 'चेतक' दुनयिा के सर्वश्रेष्ठ घोड़ों में से एक था। महाराणा 72 कलिो का कवच पहनकर 81 कलिो का भाला अपने हाथ में रखते थे। भाला और कवच सहति ढाल-तलवार का वजन मलिाकर कुल 208 कलिो का वजन उठाकर वे युद्ध लड़ते थे।
- 30 मई, 1576 को हल्दी घाटी के मैदान में वशिाल मुगलयिा सेना और रणबाँकुरी मेवाड़ी सेना के मध्य भयंकर युद्ध छड़ि गया। युद्ध में महाराणा ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दयि, परंतु अकबर की वशिाल सेना के आगे राजपूत सेना नहीं टकि पाई और राणा प्रताप को जंगल में शरण लेनी पड़ी, पर उन्होंने अकबर की दासता स्वीकार नहीं की।
- चति्तौड़ को छोड़कर महाराणा ने अपने समस्त दुर्गों को शत्रु से पुन: छीन लयिा। महाराणा ने चति्तौड़गढ़ व मांडलगढ़ के अलावा संपूर्ण मेवाड़ पर अपना राज्य पुन: स्थापति कर लयिा। उदयपुर को उन्होंने अपनी राजधानी बनाया। इसके बाद मुगलों ने कई बार महाराणा को चुनौती दी लेकनि मुगलों को मुँह की खानी पड़ी। आखरिकार, युद्ध और शकिार के दौरान लगी चोटों की वजह से महाराणा प्रताप की मृत्यु 29 जनवरी, 1597 को चांवड में हुई।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/maharana-pratap-lok-will-be-established-in-bhopal